

टीका लगाती हैं और मिष्ठान्न आदि से स्वागत-सत्कार करती हैं, भ्रातृ द्वितीया, भाई दूज।

भैरव पुं. (तत्.) 1. शिव, शंकर, महादेव 2. शिव के गण 3. संगीत में एक राग 4. भयानक शब्द वि. (तत्.) देखने में भयंकर, बहुत उग्र, घोर विनाशक।

भैरवी स्त्री. (तत्.) 1. चामुंडा, पार्वती, दुर्गा 2. संगीत में एक रागिनी, गाने का समय प्रातःकाल वि. (तत्.) भैरव से संबंध रखने वाली।

भैरवीचक्र पुं. (तत्.) 1. देवी पूजन के विशेष अवसरों पर वाममार्गियों द्वारा एकत्रित स्त्री-पुरुषों की एक मंडली, जो तांत्रिक साधना करती है 2. व्यसन-ग्रस्त दुराचारियों का समूह।

भैरवीयातना पुं. (तत्.) पुराणों के अनुसार वह यातना जो भैरव जी देहावसान के समय देते हैं।

भैरवेश पुं. (तत्.) भैरवों के ईश, शिव, महादेव।

भैषज/भैषज्य पुं. (तत्.) औषधि, दवा उपचार की जड़ी-बूटी।

भोंकना स.क्रि. (देश.) 1. चाकू, छुरी या बरछी शरीर में बलपूर्वक घुसाना 2. बोरी अथवा कपड़ों के ढेर में कोई नुकीला उपकरण घुसाना।

भोंडा वि. (देश.) बदसूरत, अशिष्ट, भद्दा टि. अभद्र होने के साथ-साथ ऐसा व्यक्ति रूप-रंग की दृष्टि से भी ठीक नहीं होता।

भोंडापन पुं. (देश.) भोंडा होने की अवस्था अथवा भाव, बदसूरती, भद्दापन, अभद्रता।

भोंदू वि. (देश.) मूर्ख, सीधा-सादा, बेवकूफ, अज्ञानी जो समझदार न हो।

भोंपा/भोंपू पुं. (देश.) 1. एक प्रकार का बाजा, जो जोर से फूँक मारने पर बजता है और बेसुरा भी होता है टि. पुरानी ट्रकों या बसों में रबड़ की बोतल जैसी आकृति के मुँह पर किसी धातु की बनी हुई कीप लगाई जाती थी, रबड़ को दबाने से कीप से आवाज निकलती थी, इस यंत्र को

भी भोंपू कहा जाता है 2. कल-कारखानों आदि की ऊँची आवाज़ से बजने वाली सीटी।

भोंसले पुं. (देश.) महाराष्ट्र का एक राजवंश, छत्रपति महाराज शिवाजी का जन्म इसी वंश में हुआ था।

भोकस पुं. (देश.) दानव, राक्षस, जिन्न 2. वि. जिसको हमेशा भूख का अनुभव रहता है।

भोकार स्त्री. (देश.) जोर-जोर से रोने की आवाज़, गला फाड़ते हुए रोने की आवाज़, विशाद और व्यथा में उच्च स्वर का रोदन।

भोक्तव्य वि. (तत्.) उपभोग के योग्य, जिसका भोग किया जा सके और जिस का कोई कुप्रभाव न हो।

भोक्ता वि. (तद्.) 1. भोगने वाला, भोजन करने वाला 2. ऐयाश, गुलछर्रे उड़ाने वाला।

भोक्तृत्व पुं. (तद्.) भोक्ता होने की अवस्था अथवा भोक्ता होने का भाव, भोक्तापन।

भोग पुं. (तत्.) 1. पदार्थ जो देवता को अर्पण किया जाता है 2. भाग्य की नियति 3. सुख-शांति प्रदान कराने वाली वस्तु 4. खाद्य सामग्री 5. स्त्री-पुरुष का मैथुन 6. ज्यो. किसी ग्रह की किसी राशि में स्थित रहने की अवधि 7. सर्प या नाग।

भोगकाल पुं. (तद्.) 1. किसी सुख, कष्ट अथवा रोग आदि के भोगने का समय 2. किसी घटना के घटित होने में लगने वाला समय।

भोगना स.क्रि. (तद्.) 1. किस वस्तु का भोग अथवा उपयोग करना 2. पाप-पुण्य का फल भोगना, सुख दुःख आदि का अनुभव करना, कर्मफल भोगना 3. संभोग करना।

भोगबंधक पुं. (तद्.) ऋण प्राप्त करके ब्याज के स्थान पर जमीन या मकान, गिरवी रख कर उसके उपयोग का अधिकार प्राप्त होना टि. ऐसी जमीन अथवा मकान का बंधक के रूप में उपयोग किया जाता है।